सेवाग्राम पहल

अरुण कुमार पानीबाबा

पारस्परिकता और संवाद मानव जीवन के मूलाधार है। संवादहीनता आसुरी प्रवृति की घोतक है। भारत देश में लंबे अर्से से संवादहीनता के आधार पर राष्ट्र और समाज निर्माण का अनूठा प्रयोग चल रहा है। इस अनोखे प्रयास से आम जन में असुरक्षा और अंधे स्वार्थ की सर्वव्यापी लक्षण तीव्रता से उभर रहा है। नतीजतन समाज बहुआयामी हिंसा और लूट–खसोट की दिशा में प्रवृत हो रहा है। भारत देश को इस समाज विघटन की प्रक्रिया से मुक्त कर सामाजिक पुनर्गठन कीओर ले जाने का प्रयास ही 'सेवाग्राम पहल' का मूल उद्देश्य है।

समाज निर्माण की प्रक्रिया में भौतिक असंतुलन का प्रश्न वास्तव में आत्म गौरब और मानव गरिमा के लुप्त होने का है। आधुनिक भौतिक, उसका आडम्बर और वर्तमान असुरक्षा के दबाव से मानव गरिमा का संदर्भ बहुत नीचे दब गया है। पिछले तीन–चार दशकों से चल रहे हिंसक–अहिंसक द्वन्दों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भारत देश में इज़्जत–आबरू का सवाल रोज़ी–रोटी के सवाल से कहीं ज्यादा मौलिक और आधारभूत मसला है। यूं तो यह सरल बात है कि इज्जत–आबरू गवां कर जो रोज़ी–रोटी उपलब्ध होती है – वह टिकाऊ नहीं होती। इज्ज़त होगी तो रोटी भी उपलबध हो जाएगी यह तथ्य आम जन अच्छी तरह समझते हैं। इस वस्तुस्थिति के आधार पर ही जातिवादी गुटबंदी की राजनीति का ढांचा विकसित हुआ है। लेकिन इज्ज़त या मानव गरिमा सामाजिक संवाद की प्रक्रिया में ही संभव है। संवाद सामाजिक पारस्परिकता का पर्याय है। समाज में पारस्परिक निर्भरता का एहसास होगा तो संवाद होगा। संवाद होगा तो मानव गरिमा की आवश्यकता का एहसास होगा। 'सेवाग्राम पहल' ऐसे कुचक्र को तोड़ने के लिए संकल्पबद्ध है जिसके चलते संवाद की प्रक्रिया अवरूद्ध है।

यह समाज का आजमाया हुआ तथ्य है कि संस्कार और संस्कृति से रोटी पैदा होती है रोटी से समाज और समाज और संस्कार नहीं बनते। राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रवाद पर हमारे देश में बहुत चर्चा और व्याख्यान होते हैं – रक्तदान से लेकर आत्मदाह आदि तक के प्रदर्शन भी कम नहीं होते। लेकिन इस तथ्य का बिल्कुल एहसास नहीं कि 'आत्म सम्मान', 'जातीय गौरव', 'भाषाई अस्मिता', 'राष्ट्रीय गौरव' आदि समस- अवधारणाएं मानव गरिमा की ही पर्यायवाची हैं, या एक दूसरे का अविभाज्य अंग। जिस समाज में मानव गरिमा और निजी गौरव का एहसास नहीं होता उसमें राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्र प्रेम, स्वदेशी भावना–संस्कार आदि की चर्चा व्याख्यानात्मक और सतही होती है।

समाज सृजन और राष्ट निर्माण का आधार पारस्परिकता में होता है। समाज, धर्म–संस्कृति, राजनीतिक संस्थाए–राष्ट्र आदि 'पारस्परिकता' के प्रत्यक्ष स्वरूप या भौतिक अभिव्यक्ति हैं। पारस्परिकता देश–अंचल (पृथ्वी, जल, वायु और आकाश) एवं काल (समय) सापेक्ष होती है। लौकिक जगत में पारस्परिकता नितांत स्थानीय–आंचलिक अथवा देशज अस्मिता आधारित होती है क्योंकि समाज (पारस्परिक–न्याय भावना) का निर्माण परिवार, कुटुम्ब कबिला, जात, गांव, बस्ती, मौहल्ला, शहर, क्षेत्रीय मंडल आदि के

आपसी संबंधों की स्मृति के आधार पर होता है। इन्हीं स्थानीय माध्यमों से यह पारस्परिकता व्यापक बनते–बनते राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और ब्रह्मांडीय बनती है। स्थानीय संस्कारों की विस्मृति से पारस्परिकता का लोप हो जाता है और बीमार समाज का जन्म होता है।

जम्बू द्वीप – भारत देश सदैव से मौलिक विभिन्नता और सांस्कृतिक वैविध्य का देश रहा है। आदि काल से दक्षिण एशिया विश्वभर में पायी जाने वाली मानव की समस्त नृवंशीय जातियों का निजी घर है। यदि हम उस इतिहास–दर्शन को जो हमें पिछले 200 वर्ष की गुलामी के दौरान हटाया गया है भूल सकें तो इस तथ्य का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं कि नीग्रो, आस्ट्रेलियाई, मंगोल, नोरडिक यह सभी भारत देश के समान रूप से मूल निवासी हैं। चंद तुर्की, इरानी, और मध्य एशियाई पारसी और मुसलमानों (अन्य मतावलम्बी इसमें शामिल नहीं) को छोड़ कर एक भी जाति समूह या समुदाय ऐसा नहीं जिसकी विदेशी मूल की कोई धुंधली सी 'जाति स्मृति' भी हो। विस्तृत लोक साहित्य, संपूर्ण वांगमय – उपनिषद, रामायण से लेकर महाभारत, कालिदास तक कहीं इक्का–दुक्का संदर्भ भी उपलब्ध नहीं जिससे यह प्रमाणित हो सके कि भारत के नोरडिक यूरोप या मध्य एशिया से यहां आये थे।

भारत आदि काल से कोल, किरात, किन्नर, भील, बानर, केवट, सुर–असुर, ब्राह्मण, क्षत्रीय, द्रविड़, मंगोल, तुरक, पठान, न जाने कितनी हज़ारों–लाखों जातियों, प्रजातियों, उपजातियों का देश है। वर्तमान भारत में आठ प्रमुख विचार धाराएं या पंथ प्रचति हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन, इस्लाम, सिख, पारसी, इसाई और यहूदी मत–मतांतर आधारित इन आठों प्रमुख पंथों के हज़ारों, लाखों उप–पंथ या संप्रदाय है। इसके अलावा सैंकड़ों बनवासी जातियां और छोटे–बड़े समुदाय है। विभिन्न पंथ, जाति, संप्रदायवादी भेद–विभेद और आराधना पद्धतियों में मूलभूत अंतर होने के बावजूद इन सभी हजारों–लाखों समुदायों के सामान्य जन में एक स्थानीयता/देशज अस्मिता ;अमतदंबनसंतद्ध में विश्वास की समानता प्रत्यक्ष अभिव्यक्त होती है। समस्त हिंदुस्तानियों की राष्ट्रीयता और नागरिकता मूलरूप में वर्नाकुलर (अंचल) आधारित है। आंचलिक अस्मिता (देशज विवेक) ही भारतीय वैविध्य को एकता में सूत्रबद्ध करती है।

लगभग 100–150 सांस्कृतिक अंचलों की गत्यात्मकता और संगम से भारतीयता का गठन हुआ है। मानव की छः मूलभूत आवश्यकताएं – भजन, भावना, भाषा, भोजन, भूषा, भवन सभी में आंचलिक अस्मिता रची बसी रहती है। मानव स्मृति और संस्कारों की दिशा तभी तक सही रास्ते चलती है जब तक अपनी स्थानीयता और जड़ों से जुड़ी रहती है। इस स्मृति से अनुशासित व्यवहार और आचरण को संस्कार कहते हैं। संस्कारों की अनुपालना से व्यक्ति और समाज की निरंतरता और पहचान बनती है। यह पहचान भाषा, बोली, धर्म संस्कृति, भोजन, भूषा, भवन आदि जीवन के समस्त अंगों में निहित और अभिव्यक्त होती है। इसी स्थानीय जहाज के पंछी की तरह इस क्षेत्रीय या आंचलिक या देशज परिधि से बंधे रहना मानव का सहज स्वभाव और प्रकृति है। इस परिधि से बिछुड़ जाने पर मानव विस्थापित या शरणार्थी बन जाता है और जब तक पुनः किसी सभ्यता–संस्कृति की परिधि से बंध नहीं जाता, यानी किसी अन्य वर्नाकुलर व्यवस्था में समरस नहीं हो जाता तब तक विस्थापित या शरणार्थी होने के दुर्भाग्य से पीड़ित रहता है। आइडेंटिटी, निजता या सामुदायिक पहचान के संदर्भ में जो संघर्ष हिंदुस्तान, और

बाकी दुनिया में चल रहा है वह मानव गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने का संघर्ष है। 'सेवाग्राम पहल' की यह स्पष्ट मान्यता है कि मानव गरिमा के लिए जारी संघर्ष मूलतः भौतिक अस्तित्व का संघर्ष है। कोला उपनिवेषवाद के खिलाफ लड़ाई अस्तित्व की लड़ाई है, जीवन मरण की लड़ाई है।

आज का विकास तंत्र और वैधानिक तंत्र आम जन के संस्कार पिंड के प्रति मात्र उदासीन नहीं बल्कि उसे समूल नष्ट करने की मुहिम का हिस्सा है। इस विश्व स्तर मुहिम (वैश्वीकरण) के चलते आधुनिक सत्ता तंत्र की अधिकांश संस्थाएं अपनी मर्यादा से वंचित हो गई है और लोक अहित का माध्यम बन गई है।

'सेवाग्राम पहल' इस संकल्प की घोषणा करता है कि वह ऐसे समस्त प्रयासों का सहयोग और समर्थन करेगा जो भारतीयता के मूलाधार वैविध्य के संरक्षण के लिए जारी है। वैधानिक और विकास तंत्र में ऐसे प्रमाणित परिवर्तन की मांग करेगा जो मानव गरिमा की स्थापना के लिए अनिवार्य है।